अनुमत्यै चरुम्। ततो वै तस्य सत्यꣳ सत्यमभवत्। अनु स्वर्गं लोकमविन्दत्। सत्यꣳ ह्वा अस्य सत्यं भवति। अनु स्वर्गं लोकं विन्दति। य एतेन हविषा यजते। य उचैनदेवं वेद। सोऽच जुहोति। अग्नये स्वाहा सत्याय स्वाहा। अनुमत्यै स्वाहा प्रजापतये स्वाहा। स्वर्गाय लोकाय स्वाहाग्नये स्विष्टकृते स्वाहेति॥ ४॥

तं मनोऽब्रवीत्। प्रजापते मनसा वै श्राम्यसि। अहमुवै मनोऽस्मि। मां नु यजस्व। अथ ते सत्यं मनो भविष्यति। अनु स्वर्गं लोकं वेत्स्यसीति। स एतमाग्नेयमष्टाकपालं निरवपत्। मनसे चरुम्। अनुमत्यै चरुम्। ततो वै तस्य सत्यं मनोऽभवत्। अनु स्वर्गं लोकमविन्दत्। सत्यꣳ ह्वा अस्य मनो भवति। अनु स्वर्गं लोकं विन्दति। य एतेन हविषा यजते। य उचैनदेवं वेद। सोऽच जुहोति। अग्नये स्वाहा मनसे स्वाहा। अनुमत्यै स्वाहा प्रजापतये स्वाहा। स्वर्गाय लोकाय स्वाहाग्नये स्विष्टकृते स्वाहेति॥ ५॥

तं चरणमब्रवीत्। प्रजापते चरणेन वै श्राम्यसि। अहमुवै चरणमस्मि। मां नु यजस्व। अथ ते सत्यं